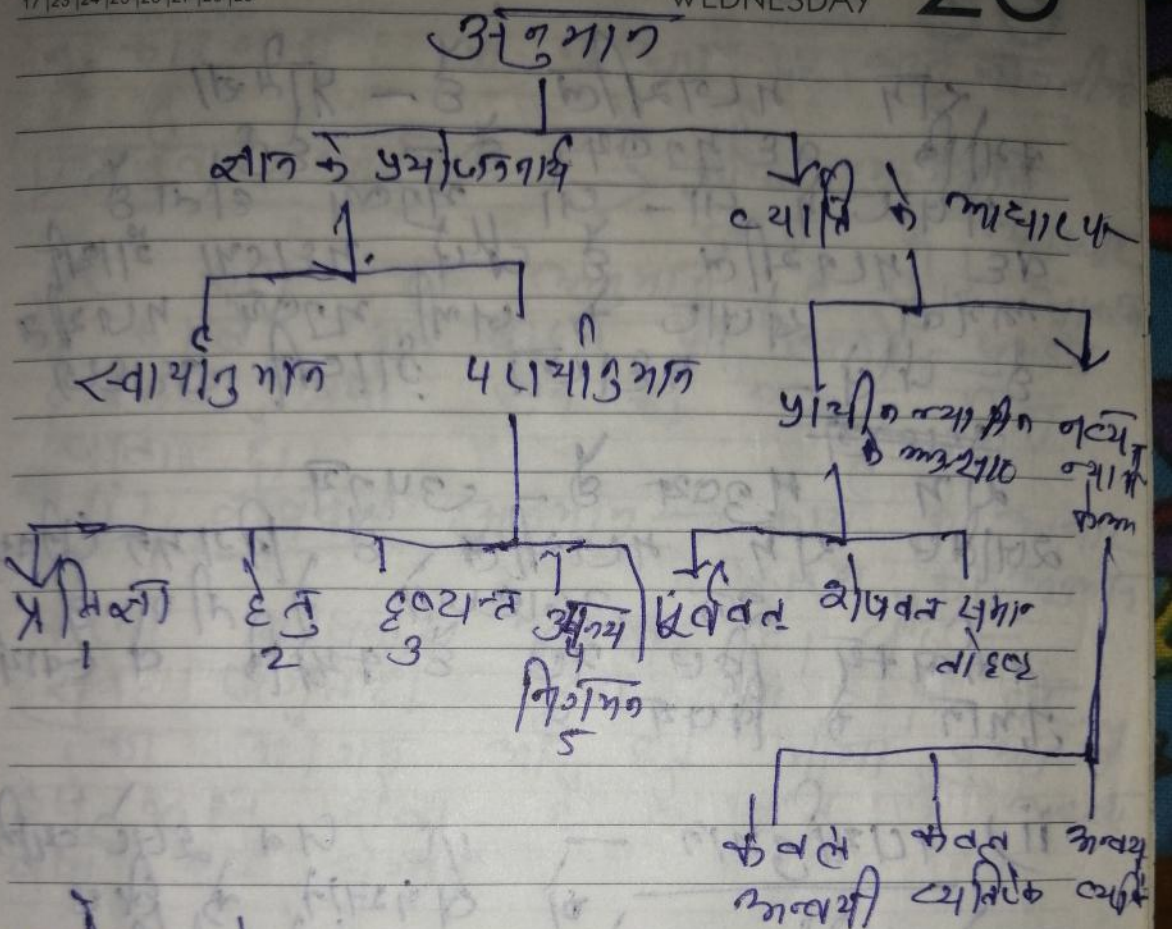

अनुमान

- ज्ञान के प्रयोजनार्थ
  - स्वार्थानुमान
  - परार्थानुमान
    - प्रतिज्ञा 1
    - हेतु 2
    - दृष्टान्त 3
    - उपनय 4
    - निगमन 5
- व्याप्ति के आधार पर
  - प्राचीन न्याय के अनुसार
    - पूर्ववत
    - शेषवत
    - सामान्यतोदृष्ट
  - नव्य न्याय
    - केवल अन्वयी
    - केवल व्यतिरेकी
    - अन्वय व्यतिरेकी

1. प्रयोजन के आधार पर अनुमान—

(i) स्वार्थानुमान → स्वार्थानुमान वह है जो स्वयं ज्ञान पाने के लिए किया जाता है। जब व्यक्ति केवल अपने हित के लिए अनुमान करता है तब वह अनुमान स्वार्थानुमान होता है। जैसे- मैं जानना चाहता हूँ कि राम मरणशील है इसके लिए मैं निम्नलिखित रूप से अनुमान करता हूँ

राम मरणशील है — प्रतिज्ञा
क्योंकि वह मनुष्य है — हेतु
संसार में जो-जो मनुष्य होता है
वह मरणशील है जैसे महात्मा गाँधी
अथवा संसार के सभी मनुष्य मरणशील
है जैसे — महात्मा गाँधी उदाहरण
~~उदाहरण~~
राम मनुष्य है — उपनय
इसलिए राम मरणशील है निगमन (निष्कर्ष)
इन उदाहरणों में तीन ही
तर्कवाक्य दिए गए हैं क्योंकि वे स्वार्थानुमान के विषय हैं।

ii) परार्थानुमान — पर यानि दूसरे व्यक्ति को समझाने के लिए उसके संदेह को दूर करने के लिए अनुमान किया जाता है तो उसे परार्थानुमान कहते है इस अनुमान में पाँच तर्कवाक्यों की सहायता ली गई है, इसलिए इसे पंचावयव अनुमान भी कहते है, उपर्युक्त उदाहरण में पाँच तर्कवाक्यों को दर्शाया गया है, ये पाँचो वाक्य परार्थानुमान है

vi) i) पंचावयव अनुमान को बौद्ध, जैन और न्याय दर्शन स्वीकारते हैं।

२. कारणता के आधार पर अनुमान तीन

i) पूर्ववत् अनुमान → पूर्ववत् अनुमान कारण के आधार पर कार्य का अनुमान है जैसे - आकाश में काले घने बादल को उमड़ते - घुमड़ते देखकर वर्षा होने का अनुमान किया जाता है।

ii) शेषवत् अनुमान → कार्य के आधार पर कारण का अनुमान करना शेषवत् अनुमान है। जैसे - सुबह जगते ही देखा जाता है कि घर का आँगन और छत भीगा हुआ है इससे ज्ञात होता है कि रात में अवश्य वर्षा हुई होगी।

iii) सामान्यतोदृष्ट अनुमान → सामान्यतोदृष्ट अनुमान वह अनुमान है जिसके द्वारा कतिपय चिन्हों या संकेतों द्वारा अदृष्ट साध्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है जैसे - सींग और पूँछ कारण कार्य संबंध नहीं होता है फिर भी किसी जानवर के सींग को देखकर हम अनुमान करते हैं कि उसके पास पूँछ भी है, हम प्रायः पाते हैं कि सींग वाले जानवर पूँछ वाले होते हैं।